

#### ग्रसाधारण

## EXTRAORDINARY

Mai I Table I

#### PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित

### PUBLISHED BY AUTHORITY

सं 16] नई दिल्ली, पृहस्पतिथार, जनवरी 26, 1967/माघ 6, 1888 No. 16] NEW DELHI, THURSDAY, JANUARY 26, 1967/MAGHA 6, 1888

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह ग्रलग संकलन के रूप में रक्षा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

#### MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

#### NOTIFICATION

New Delhi, the 26th January 1967

No. 31/11/66-Ad.HI-B.—The President is pleased, on the occasion of Republic Day, 1967, to award an Appreciation Certificate to the undermentioned officer of the Collectorate of Central Excise, Bombay, for exceptionally meritorious service rendered when undertaking a task even at the risk of his life:—

Name of the officer and rank:

Shri William James Robb, Superintendent of Central Excise.

Statement of services for which the Certificate is awarded.

Shri Robb received information at 02.00 hrs. at night on the 25th May, 1966 that contraband goods would be landed at the Training Ship Jawahar Jetty, Pilot Bunder, Bombay. He took immediate action to collect whatever staff was available at that hour of the night and proceeded to the suspected landing area. There, he kept a secret watch and then rushed into action at the proper time. At the Jetty, Shri Robb found one truck and two mechanised fishing vessels, loaded with smuggled goods and the smugglers. With the meagre staff of only three men at his disposal, Shri Robb challenged the smugglers numbering over

twenty. Snri Robb successfully intercepted the truck and the two fishing vessels which had started their engines to get away to sea. Not only did Shri Robb intercept the truck and the two fishing vessels, he also overpowered and detained seven of the smugglers at the risk of his life. Shortly after the vessels were intercepted in complete darkness, one of the fishing vessels which was fully loaded with contraband goods broke its mootings and started drifting into the open sea. Shri Robb without hesitation, and with complete disregard for his personal safety, dived into the open sea and swam to the drifting vessel. He boarded it and brought the vessel and the contraband back safely to the Jetty. Shri Robb's quick action in the face of overwhelming odds and when he was completely outnumbered, resulted in the seizure of the two mechanised vessels, one truck and the smuggled goods valued at Rs. 3,00,660. Shri Robb, in this operation, has displayed a keen sense of resourcefulness, leadership and conspicuous bravery of a very high order.

In another case wherein Shri Robb's above-mentioned qualities have come to actice very conspicuously is the Juhu Beach Watches case. Shri Robb received information at about 23.00 hrs. on the night of the 4th July, 1966 that smuggled goods would be landed at Juhu Beach. Bombay during the night. Snri Robb took immediate action and collected whatever staff was available at that hour of the night and proceeded to the suspected area with the Assistant Collector and maintained an unobtrusive watch. It was noticed that some persons were moving on the sea shore in a suspicious manner. Shri Robb went into action to intercept these persons as they were suspected to be landing the contraband. The smugglers attacked the officers and in order to detain the smugglers the Assistant Collector and Shri Robb had to open fire with their revolvers and grapple with them. Shri Robb's indifference to personal danger and prompt action resulted in the interception and detention of five notorious smugglers and also seizure of wrist watches and other contraband on the sea shore valued at Rs. 20,00,000. All the five persons detained are known to be dare devils. During this operation, Shri Robb has displayed cool courage, a deep devotion to duty, presence of mind and determination to work even at the risk of his life.

Apart from the above two cases, Shri Robb has helped in the detection of several cases involving a total of over 80,000 tolas of gold.

2. The award is made under Clause (a) (i) of para 1 of the Scheme governing the grant of awards to the officers and staff of the Customs, Central Excise and Land Customs Departments published in Part I, Section 1 of the Gazette of India Extraordinary Notification No. 12/139/59-Ad, III-B, dated the 5th November, 1962.

Shri Robb being a gazetted officer will not be eligible for any monetary allowance alongwith the award.

D. P. ANAND, Addl. Secy.

## वित्त मंत्रालय

(राजस्व तया बीमा विभाग)

# ग्रषिसूचना

नयी दिल्ली, 26 जनवरी, 1967

संख्या 31/11/66-ए०डी०-3-बी०—राष्ट्रपित जी, गणतन्त्र दिवस 1967 के श्रवसर पर सीमाणृत्क तथा केन्द्रीय उत्पादन शृत्क समाष्ट्रती कार्याक्षय, बग्धई के निग्मलिखित इ.फसर को श्रपमे जीवन को भी संकट में डालने वाला कार्य करते हुये की गयी श्रसाधारण प्रशस्त सेवा के लिए प्रशंसा प्रमाण-पक्ष प्रदान करते हैं:---

### श्रफसर को नाम तथा पर

श्री विलियम जेम्स रॉव,

केन्द्रीय उत्पादम-एक्क के अधीकक ।

## सेवाओं का वर्णन, जिनके लिये प्रमाण-पत्र प्रवान किया गया है

25 मई, 1966को रात के 2 बजे श्री राँव को सूचना मिली कि प्रशिक्षण पोत जवाहर जेटी, पायलट बन्दर, बम्बई में प्रवैध मधल उतारा जायेगा । श्री रॉब ने सस्परता से कार्यवाही की तथा रात के उस समय जो भी कर्मचारी मिल सके उन्हें लेकर उस स्थान की और गये जहां माल उसरने के बारे में भूचना मिली थी। वहां वे छिपकर पहरा देते रहे तथा कार्यवाही करने के लिए ठीक समय पर झपट पड़े। जेटी पर, श्री रांध ने श्रवैध माल तथा तस्करों से भरा एक दूक तथा दो मत्स्य-पोक्ष पाये। श्रपने पासे सिर्फ तीन श्रादमी होते हुये भी, श्री रॉब ने तस्करों को ललकारा जो संख्या में बीस से भी ऊपर थे। मत्स्य -पोतों ने खले समद्र में बढ़ जाने के लिए अपने इंजिन चाल कर दिये थे, तथापि श्री रॉबन केवल ट्रक को तथा मत्स्य -पोतों को रोक लेने में सफल हो गये, परन्तू भ्रपने प्राण संकट में जाल कर वे सात तस्करों को भी काब करके हिरासत में लेने में सफल हो गये। घोर अंधेरे में इन पोतों को रोकने के थोड़ी ही देर बाद उन में से ग्रवध माल से लबालब भरा एक पोत धाट से बांधने का रस्सा तोड़कर खुले समृद्र में बहु चला । बिना हिचिकिचाहट के तथा व्यवितगत सुरक्षा की बिरुकुल परवाह न करके श्री रॉब ने खलें समद्र में छलांग लगा दी ग्रीर तैर कर बहती हुई नौका के पास पहुंच गये। वे नौका पर चढ़ गये तथा नौका एवं भवैध माल को ज्यों का त्यों जैटी तक ले आये। उरकट कठिनाइयां होते हुए तथा तस्करों की संख्या के मुकाबले में अपने पास बहुत थोड़े श्रादमी होते हुए भी, श्री रांव ने तत्परता से जो कार्यवाशी की, उससे दो मशीन-चालित नौकाएं, एक टक सथा 3,00,660 रुपये मुल्य का अवैध माल पुकड़ा गया। इस कार्य में श्री राँख ने प्रखर प्रत्यत्पन्नमृति. नेतृस्य तथात्रहत उच्चकोटिकी विशिष्ट वीरताका परिचय दिया है ।

एक अन्य मामले में भी, श्री राँब के उपर्यक्त गुण विशाद रूप से परिलक्षित हुए; वह मामला है जुहू तट का बड़ी कांड । 4 जुलाई, 1966 को रावि के 11 बजे श्री राँब को सूचना मिली कि रात को बम्बई के जुहू तट पर चोरी-छिपे लाया गया माल उतारा जायेगा। श्री राँब ने तस्परता से कार्यवाही की और रावि के उस समय जो भी कर्मचारी मिल सके उन्हें इकट्ठा किया तथा सहायक समाहत के साथ संविश्व क्षेत्र की श्रोर कर श्रोर चुप चाप चौकसी करते रहे। यह देखा गया कि कुछ व्यक्ति सन्देहपूर्ण हालत में सम्इतट पर चूम फिर रहेथे। श्री राँब ने उनको रोकने की कार्यवाही की, क्यों कि वे अवध माल उतारते लग रहेथे। तस्करों ने अफसरों पर ग्राक्रमण कर दिया और सस्करों को रोक रखने के लिये सहायक समाहता तथा श्री राँब ग्रपनी पिस्तील से गोलियां चलाते हुए उनसे गुरथम-गुरथा हो गये। श्री राँब ग्रारा व्यक्तिगत खतरे की उपेक्षा तथा तत्यर कार्यवाही की जाने के कारण चौरी-छिपे माल लाने वाले पांच कुख्यात तस्करों को रोका और पकड़ा जा सका, तथा 20,00,000 रुपए मूल्य की कलाई बड़ियां एवं ग्रग्य श्रवध सामान समूज तट पर पकड़ा जा सका। पकड़े गए पांची व्यक्ति माने हुए मरने-मारने वाले तस्कर हैं। इस ग्रिथमान में श्री राँब के निश्चल साहस, ग्रगध कर्तव्यक्ति माने हुए परने-मारने वाले तस्कर हैं। इस ग्रिथमान में श्री राँब के निश्चल साहस, ग्रगध कर्तव्यक्ति हो। है।

उपर्युक्त दो मामलों के ग्रलावाश्री राँव ने श्रम्य कई मामलों के पकड़ में सहायक्षा की है। जिन में कुल 80,000 तोले सोना पकड़ा गया है। 2. यह पुरस्कार सीमा णुरूक, केन्द्रीय उत्पादन शुरूक सथा स्थल सीमा णुरूक के स्रफसरों और कर्मचारियों को पुरस्कार देने से सम्बन्धित योजना की कण्डिका 1 के खण्ड (क,) (i) के श्रन्तर्गत दिया जाता है । यह योजना भारत के गजट ग्रसाधारण के भाग 1, खण्ड 1, में ग्रिधसूचना मंख्या 12/139/59-एडी०3-बी, दिनाक 5 नवम्बर, 1962 के रूप में प्रकाशित हुई थी।

राजपितत अधिकारी होने के कारण श्री रॉब प्रशंसा प्रमाण-पत्न के साथ कोई श्राधिक भत्ता पाने के पात नहीं होंगे ।

बी० पी० भानन्व, भतिरिक्त सचिव ।